कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

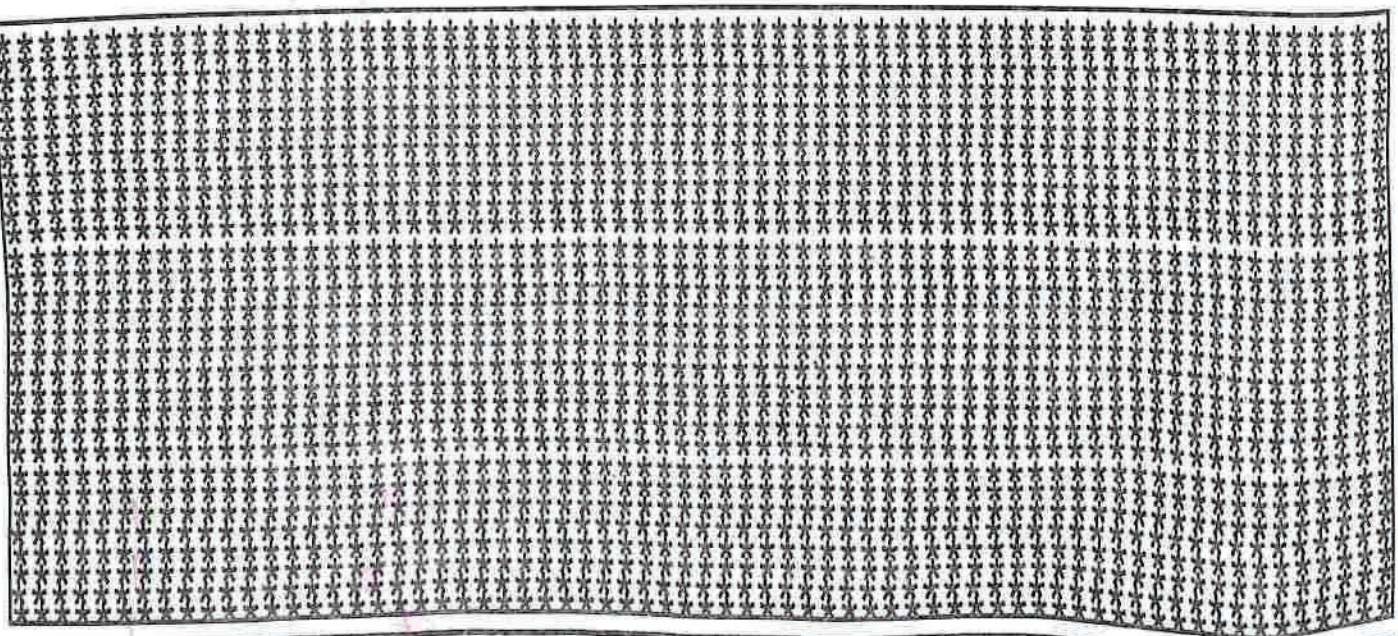

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1.

उत्तर प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के अध्याय 'स्वामी केशवानन्द' से लिया गया है।

इसमें केशवानन्द जी के कार्यों का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद- स्वामी केशवानन्द जी ने अपने जीवन में सभी धर्मों के प्रति समानता सद्भावना प्रकट की। वे जाट जाति के थे परन्तु सिक्खगुरु नानकदेव के पुत्र चन्दन द्वारा प्रवर्तित उदासी सम्प्रदाय में दीक्षित हुए। गुरु ग्रन्थ के उत्तम शिष्य हुए। ग्यारह वर्षों की साधना अथवा परिश्रम के बाद 100 पेजों में सिक्खों के इतिहास के लेखन का कार्य किया। बटँवारे के समय हुई हिंसा में घायल मुस्लिमबन्धुओं की चिकित्सा-सेवा की।

2.

उत्तर प्रसंग- यह श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्द
के अध्याय 'मरुसौंदर्यम्' से लिया गया है।

इसके लेखक विद्याधर शास्त्री है।
इसमें मरुस्थल के सौंदर्य का वर्णन है।

हिन्दीअनुवाद:- स्वर्णमय मरुस्थल को किस व्यक्ति ने नहीं देखा उसने कहीं भी और मनोरम दृश्य नहीं देखा। सुमेरु पर्वत के समान

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स्वर्णआभा मरूस्थल में स्पष्ट रूप से चमकती है। पर्वतों की काली चट्टानों में ऐसा दृश्य नहीं देखा जा सकता है।

3. उत्तर

प्रसंग- अयं पद्यांश अस्माकं 'स्पन्दना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'जयजय सुरभारती' इति पाठात् उद्धृत अस्ति। मूलरूपेण अयं हरिरामआचार्येण विरचित 'मधुच्छन्दा' इति पुस्तकात् उद्धृत अस्ति।

अस्मिन् श्लोके कवि वाग्देव्याः वैशिष्ट्यं प्रस्तुतं करोति।

व्याख्या- हे कवि कथयति यत् हे वाग्देवी! त्वम् आश्रयप्रदायिनी, त्रिलोकी श्रेष्ठा, सुराणां मुनिनां वन्दिता असि। त्वम् नवकाव्यरसानाम् माधुर्य प्राप्तोऽसि। कविता रूपेण अभिव्यञ्जित असि। त्वम् आभूषणानां युक्त सुन्दरं वस्त्रं धारिणी असि अर्थात् त्वम् अति मनोहरा असि।

व्याकरण-टिप्पणी- त्वमसि - त्वम् + असि (अनुस्वारसंधि)
त्रिभुवन - त्रयाणां भवनानां समाहारः (द्विगुसमास)
सुरमुनि- सुरश्च मुनि च (द्वन्द्व समास)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. उत्तर- प्रसंग- नाट्यांशोऽयं अस्माकं 'स्पन्दना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति पाठात् उद्धृत अस्ति। अस्य लेखकः नारायण-शास्त्रीकांकरः अस्ति।
अस्मिन् नाट्यांशे प्रतापस्य सर्वदारेन सह संवादं प्रस्तुतं अस्ति।

व्याख्या- प्रतापः- हाय माम धिक् अस्ति। चेत् अहं मातृधरायाः रक्षा कर्तुं असमर्थोऽस्मि। तत् माम अत्र निवासेन किमपि प्रयोजनम् नास्ति। (दीर्घ स्वासं त्यजयति।)
(तत् पश्चाद् कोऽपि राजपुत्रः वीरः प्रवेशं करोति)
सर्वदारः- (नृपोचितं प्रणामं कृत्वा)
महाराज भवतः विजय भवतु विजय भवतु।

प्रतापः- (दीर्घ स्वास त्यक्त्वा मुखं उत्थापय च)
हाय धिक्कारम् अस्ति। भ्रातः त्वम् अपि विजयध्वनिं कृत्वा माम् लज्जायुक्तं करोसि।

सर्वदार- हे प्राणाधार! भवान् इत्थम् किम् कथयति? स्वधर्मस्य पालनाय भवन्त भवत सर्व अपि कृतम्। स्वतंत्रतार्थे भवान् अनेकानि दुःखानि सहनम् कृतम् अतैव भवतः सदैव विजयः भविष्यति।

व्याकरण टिप्पणी- राजोचितम् - राजा + उचितम् (गुण संधि)
कृत्वा - कृ + क्त्वा, स्वधर्मस्य - स्वधर्म, पंचमी एकवचन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

5.

ii
उत्तर कस्तूरी मृगात् जायते।

(iii)
उत्तर इति गीतस्य रचनाकारः श्रीधरभास्करवर्णेकरः अस्ति।

(iv)
उत्तर पञ्चतन्त्रस्य रचना विष्णुशर्मणा कृता।

(v)
उत्तर ~~अस्माभिः लोककल्याणकारी कार्याणि~~
अस्माभिः यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि

(vi)
उत्तर सर्वे प्राणिनः प्रियवाक्यवदनेन तुष्यन्ति।

(vii)
उत्तर संघे शक्ति पाठ 'मित्रलाभ' इति परिच्छेदात् सम्पादिता विद्यते।

6.
उत्तर ततस्तं किम् भूत्वा दशति?

7.
उत्तर भवान् किम् वदति?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8. कस्य सदा दिनं एव भविष्यति?

9. मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दति?

10.
उत्तर- अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।
जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

हिमालयाद् समारभ्य यावदिन्दुसरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते॥

11.
उत्तर क) शीर्षकं- 'परोपकारः'
ख)
(i) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।
(ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।
(iii) नदी स्वजलं न पिबति।
(iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनम् वरम् विद्यते।
(v) परेषाम् उपकारः परोपकारः।
ग) (i) वृक्षाः
(ii) सर्वे
(iii) उपकारिणी भीति
(iv) जीवनम्

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12-

(i) महा + ऋषि
संधि - गुण स्वर संधि

(ii) शिवः + अहम्
संधि - उत्व विसर्ग संधि

13-

(i) गायकः
संधि - अयादि

(ii) शिवश्च
संधि - श्चुत्व व्यंजन संधि

14

i) विशालं च तत् भवनम्
कर्मधारय समास

(ii) भरतश्च शत्रुहनश्च
द्वन्द्व समास

(iii) प्रतिदिनम्
अव्ययीभाव समास

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(15. उत्तर

i) विभक्ति- द्वितीया
कारण- 'विना' शब्दे योगे द्वितीया भवति।

(ii) विभक्ति - चतुर्थी
कारण - 'नमः' शब्दे योगे चतुर्थी भवति।

(iii) विभक्ति - द्वितीया
कारण - 'उपर्युपरि' शब्दे योगे द्वितीया भवति।

16.
i) श्रीधरः धनी आसीत्।
ii) शिक्षिका बालिः पाठं पाठयति।

17.
i) बुद्धि + मतुप्
(ii) पार्वत + ङीप्

18.
i) अहं श्वः देहली गमिष्यामि।
ii) तृणानि इतस्ततः विकीर्णानि आसन्।
iii) वयम् अधुनैव कार्यं सम्पादयामः।

19.
जनेन ग्रामः गम्यते।

(20) भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति।

(21) अहं नगरं गच्छामि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

22.
उत्तर (i) महेशः रात्रौ सपादद्शवादने शयनं करोति।
(ii) 'शताब्दी' रेलयानं पादोनदशवादने जयपुरात् देहलीं गच्छति।

23.
i) कृषकः प्रातः क्षेत्रं प्रति गच्छति।
ii) हट्टे तिस्र महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति।
(iii) अहं रोटिकाम् खादामि।

25.
उत्तर महेशः - निरञ्जन। (i) श्वः रविवासर तव का योजना वर्तते?

निरञ्जनः - अरे त्वं न जानासि? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

महेशः - अहो! उत्तमः विचारः। सर्वे श्व कदा गम्यते

निरञ्जनः - प्रातः अष्टवादनाद् आरभ्य कार्यमिदं भविष्यति।

महेशः - पूर्वं कस्य भागस्य स्वच्छता करिष्यते?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निरञ्जन- वासतः विद्यमानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः ।

महेशः- तेन तद् रमणीयं सुन्दरं च भविष्यति ।

निरञ्जनः- नालीनां स्वच्छता योजनायां स्वीकृताः

7.

सुनगरम्
18 मार्च 2019

प्रियमित्र ! कवीन्द्र !

कुशली सन् कुशलं कामये । मा शि.बोर्ड परीक्षा सन्निकटे वर्तते । अतः समयसारिणीं निर्माय योजनया अधीयानः अस्मि । अधुना मम परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति । गुरवः सर्वस्मिन् श्रद्धान् प्राप्तुम् विद्यालये विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति । ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते । भवानपि योजनया एव अधीयानः स्यात् । गतः कालः न पुनरायाति, इति सूक्तिं सर्वदा अपि स्मर ।

भवन्मित्रम्
नरेन्द्रः

BSER HS/2019

26.

(i) महिला कूपात् जलं आनयति ।
(ii) त्वम् अपि गच्छ ।
(iv) अहं गणितं च विज्ञानं च पठामि ।
v) मित्राय दुग्धं रोचते ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

28.

(i) एकदा एक: मकर: नद्यां वसति स्म।

(ii) नद्या: तटे फलोपेत: जम्बूवृक्ष: आसीत्।

(iii) तस्य शाखायां वानर: वसति स्म।

(iv) मकर: वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत्।

(v) "फलानि अतिमधुराणि" अत: वानर हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अत: वानर हृदयं खादामि

(vi) वानर: मकरस्य प्रयासं बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान्।

27.

उत्तर (i) पर्वतस्य पृष्ठत: ग्राम: अस्ति।

(ii) ग्रामे सुन्दराणि उपवनानि सन्ति।

(iii) मध्ये च भगवत: शिवस्य देवालयोऽस्ति।

(iv) पर्वतं निकषा एका नदी प्रवहति।

(v) ग्राम जना: नद्यां वसन्ति।

(vi) ग्रामस्य विद्यालय: अतीव मनोरम: अस्ति।

समाप्त